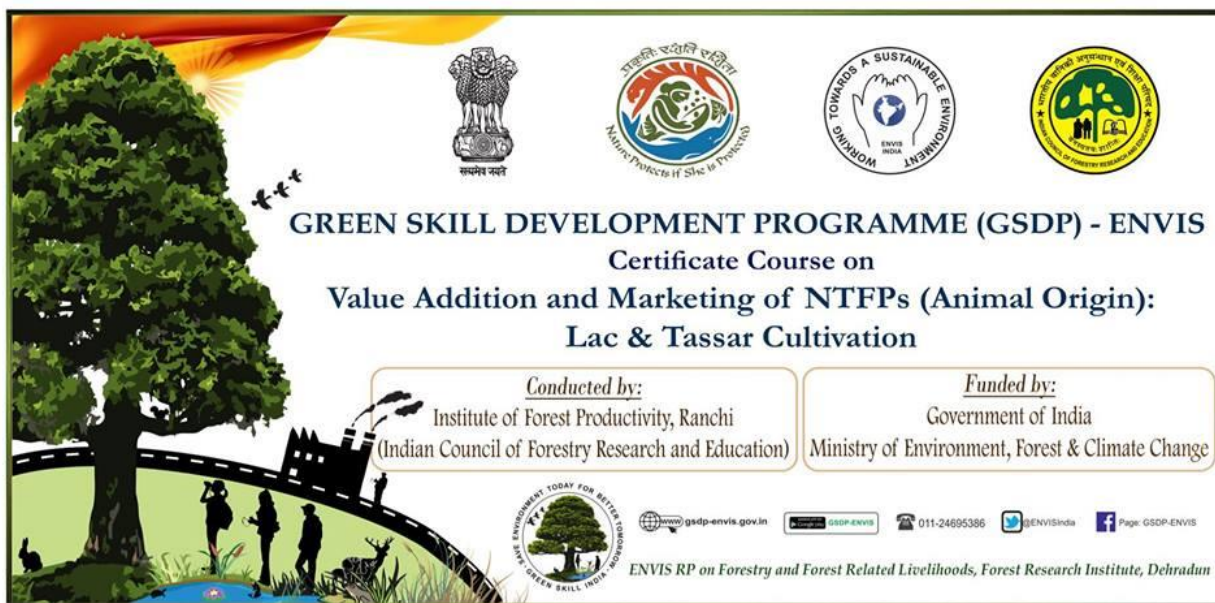


## "GREEN SKILL DEVELOPMENT PROGRAMME (GSDP)-ENVIS CERTIFICATE COURSE ON VALUE ADDITION OF NTFPS (ANIMAL ORIGIN): LAC AND TASAR CULTIVATION" AT IFP RANCHI



In line with the Skill India Mission of Hon'ble Prime Minister, Ministry of Environment, Forest & Climate Change (MoEF & CC) utilizing the vast network and expertise of ENVIS Hubs/RPs, has taken up an initiative for skill development in the environment and forest sector to enable India's youth to get gainful employment and/or self-employment, called the Green Skill Development Programme (GSDP).

8 weeks "Green Skill Development Programme (GSDP)-ENVIS Certificate Course on Value Addition of NTFPs (Animal Origin): Lac and Tasar Cultivation" funded by Ministry of Environment, Forests and Climate Change, Government of India and organized by Institute of Forest Productivity, Ranchi was inaugurated on 1 August 2018. Participants from various states of India viz. Uttar Pradesh, Jharkhand, Bihar, West Bengal and Maharashtra, are attending the programme.



At the outset Dr. Nitin Kulkarni, Director welcomed the participants and said that lac and tasar important forest based organic product traditionally enshrined with tribal and marginal populations in India. Huge benefits can be attained through training on scientific cultivation, processing, product development, value addition and marketing of these resources. Thus, the participants should utilize the training programme to the optimal.





Speaking on the occasion Dr. Sanjay Singh, Head Extension Division and Course Director informed that in contrast with most vocational training programmes which focus on mechanical/technical skills this training course has been designed to develop 'soft' or 'green' skills in the lac and tasar sectors. Green skills contribute to preserving or restoring environmental quality for sustainable future and include jobs that protect ecosystems and biodiversity, reduce energy and minimize waste and pollution.



Dr. Shard Tiwari, Group Coordinator (Research) of the institute, Dr. Niramal Kumar, Head, Transfer of Technology Division, Indian Institute of Natural Gums and Resins, Namkom, Ranchi; Dr. D. P. Singh, Senior Scientist, Central Tassar Research and Training, Nagri, Ranchi, Sh. S. N. Vaidya, Sh. B. D. Pandit etc. were present on the occasion.





# लाह एवं तसर की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन युवाओं को वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए कौशल विकास जरूरी : डॉ. कुलकर्णी

देशप्राण संवाददाता

पिस्का नगड़ी, 1 अगस्त : वन उत्पादकता संस्थान लालगुटवा रांची के तत्वावधान में हरित कौशल विकास कार्यक्रम, वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित लाह एवं तसर की खेती पर आठ सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन बुधवार को संस्थान के सभागार में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. नितिन कुलकर्णी, निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस अवसर पर उपस्थित प्रशिक्षणार्थी और वैज्ञानिकों को संबोधित करते निदेशक डॉ. कुलकर्णी ने कहा कि भारत को युवा जनशक्ति को वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए कौशल और क्षमता प्रदान करने की आवश्यकता है। जितना अधिक हम कौशल विकास को महत्व देते हैं, उतना अधिक सक्षम युवा होंगे। भविष्य की संभावनाओं की भविष्यवाणी करना और आज ही उनके लिए तैयार करना महत्वपूर्ण है।

दो महीने प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को लाख पोषक पौध, पोषक पौध का पौधशाला, पोषक पौध का रख-रखाव, लाख खेती करने की विधि (कटाई-छंटाई, लाख बीज की पहचान, लाख बीज का



दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी एवं अन्य।

संचरण, दुश्मन कीटों का रोकथाम विधि, लाख उत्पाद तथा लाख बाजार आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही, तसर की खेती कैसे करें (तसर पौध का पौधशाला, पौध का रख-रखाव, पौध का रोपण, पौध को दुश्मन कीटों से बचाव, तसर उत्पादन के लिए कीट का चपन एवं कीट संचरण करने की विधि, तसर कीट के दुश्मन को कीटों से बचाव की विधि, कोकून तैयार होने पर उसका रख-रखाव एवं बाजार) से संबंधित विषयों पर प्रतिभागियों को अवगत कराया जाएगा।

इन पाठ्यक्रमों को पूरा करने वाले अभ्यर्थियों को चिड़ियाघर, वन्यजीव अभयारण्यों, राष्ट्रीय उद्यानों, जीवमंडल भंडार, वनस्पति उद्यान, नर्सरी, आर्द्रभूमि स्थलों, राज्य जैव विविधता बोर्ड, जैव विविधता प्रबंधन समितियों, वन्य जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो में लाभप्रद रूप से नियोजित किया जा सकता है। साथ ही, शहरी स्थानीय निकायों में सीवेज को सुधारने के तरीके पर सलाह देने के लिए, स्वच्छता, भूमि उपयोग संवर्धन, प्रदूषण से निपटने, जल प्रबंधन, निर्माण से संबंधित

## पिस्का नगड़ी में पुलिस ने मवेशी लदे तैल को पकड़ा

पिस्का नगड़ी, 1 अगस्त : नगड़ी पुलिस ने बुधवार को सुबह लगभग आठ बजे गस्ती के दौरान पिस्का रेलवे क्रॉसिंग के पास से एक पिकअप वैन पकड़ा, जिसमें नौ मवेशी थे। गाड़ी में जगह से अधिक मवेशी लाने के चलते तीन मवेशी का दम छुटने से मौत हो गई थी। गाड़ी का चालक हाफेज खान और गाड़ी को नगड़ी पुलिस ने पकड़कर शाने लायी। वह पन्ना बंदो से आ रहा था और रांची ले जाया जा रहा था।

क्षेत्र इत्यादि में नियोजन संभव है। संस्थान के जनसंपर्क पदाधिकारी श्री रामभुनाथ मिश्रा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में विभिन्न राज्यों (झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, एवं ओडिशा) से प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। संस्थान द्वारा 17 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के लिए चर्चनित किया गया है।

इस अवसर पर संस्थान के समुह समन्वयक डॉ. शरद तिवारी, पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. संजय सिंह, अन्य वैज्ञानिकगण, भारतीय प्राकृतिक राल एवं गैर संस्थान, नामकुम से डॉ. निर्मल कुमार, श्री ए.के. सिन्हा एवं तसर अनुसंधान संस्थान से वैज्ञानिक डॉ. जीर्ण सिंह उपस्थित थे।

## कार्यक्रम

वन उत्पादकता संस्थान लालगुटवा में आठ सप्ताह का प्रशिक्षण शुरू, शामिल हैं 17 प्रशिक्षणार्थी

# भविष्य के लिए युवाओं को तैयार करना जरूरी

संवाद सूत्र, पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान लालगुटवा रांची के तत्वावधान में हरित कौशल विकास कार्यक्रम, वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित लाह एवं तसर की खेती पर आठ सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन बुधवार को संस्थान के सभागार में किया गया। उद्घाटन डॉ. नितिन कुलकर्णी, निदेशक वन उत्पादकता संस्थान ने दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर डॉ. कुलकर्णी ने कहा कि देश के युवाओं को वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए कौशल और क्षमता प्रदान करने की आवश्यकता है। जितना अधिक हम कौशल विकास को महत्व देंगे, हम उतना अधिक सक्षम युवा होंगे। भविष्य की संभावनाओं की भविष्यवाणी करना और



कार्यक्रम का उद्घाटन करते निदेशक ● जागरण

उसके लिए तैयार करना महत्वपूर्ण है। दो माह के प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को लाख पोषक पौध, पोषक पौध की पौधशाला, पोषक पौध का रख-रखाव,

लाख खेती करने की विधि (कटाई-छंटाई, लाख बीज का पहचान, लाख बीज का संचरण, दुश्मन कीटों का रोकथाम विधि, लाख उत्पाद तथा लाख

बाजार आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा। इन पाठ्यक्रमों को पूरा करने वाले अभ्यर्थियों को चिड़ियाघर, वन्यजीव अभयारण्यों, राष्ट्रीय उद्यानों, जीवमंडल भंडार, वनस्पति उद्यान, नर्सरी, आर्द्रभूमि स्थलों, राज्य जैव विविधता बोर्ड, जैव विविधता प्रबंधन समितियों, वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो में लाभप्रद रूप से नियोजित किया जा सकता है। संस्थान के जनसंपर्क पदाधिकारी शम्भुनाथ मिश्रा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में विभिन्न राज्यों (झारखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, एवं ओडिशा) से प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। संस्थान द्वारा 17 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के लिए चर्चनित किया गया है। मौके पर संस्थान के समुह समन्वयक डॉ. शरद तिवारी, पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. संजय सिंह, अन्य वैज्ञानिक उपस्थित थे।